अध्याय 5

पूर्ति की अवधारणा
(Concept of Supply)

किसी भी वस्तु या सेवा के कीमत निर्धारण में उसकी माँग और पूर्ति का विश्लेषण करना अति आवश्यक है। आइये हम पूर्ति की अवधारणा को विस्तार से समझने का प्रयास करते हैं। सर्वप्रथम हमें पूर्ति के अर्थ को समझना होगा।

किसी वस्तु की पूर्ति का अभिप्राय वस्तु की उस मात्रा से है जिसे विक्रेता एक निश्चित अवधि में, निश्चित कीमत पर बेचने को तत्पर रहता है।

सामान्यतः हम उत्पादक द्वारा तैयार माल के स्टॉक और पूर्ति का अर्थ एक ही मानते हैं जबकि अर्थशास्त्र के दृष्टिकोण से ये दो अलग–अलग अवधारणाएँ हैं। यद्यपि पूर्ति स्टॉक का एक भाग कही जा सकती हैं। इसे इस प्रकार सरल उदाहरण की सहायता से समझा जा सकता है। यदि एक उत्पादक ने अपनी तेल मिल में 100 टिन तेल का उत्पादन किया है तो ये सभी 100 टिन उसके द्वारा तैयार माल का स्टॉक कहलाएगा। यदि वह उस वित्तीय वर्ष में 90 टिन बाजार भाव पर बेचने के लिए तैयार है तो ये 90 टिन उसकी पूर्ति मात्रा कहलाएगी।

अतः पूर्ति स्टॉक का वह भाग हैं जिसे उत्पादक विक्रय करने के लिए निर्धारित अवधि में तत्पर हैं।

पूर्ति को प्रभावित करने वाले तत्व :–

किसी वस्तु अथवा सेवा की पूर्ति बाजार में अनेक कारकों से प्रभावित होती है। कुछ ऐसे कारक हैं जिनसे पूर्ति प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होती है जैसे वस्तु की बाजार कीमत और वस्तु को उत्पादित करने वाले साधनों की कीमत। इसी प्रकार कुछ अन्य कारक भी परोक्ष रूप से पूर्ति को प्रभावित करते हैं जो इस प्रकार हैं :–

(1) वस्तु की बाजार कीमत :– जब किसी वस्तु अथवा सेवा की बाजार कीमतें अधिक होती है, तो उसके उत्पादक को अधिक लाभ प्राप्त होता हैं इससे उत्साहित होकर बाजार में उस वस्तु के सभी उत्पादक अपना उत्पादन बढ़ाकर पूर्ति मात्रा बढ़ा देते हैं, इसके विपरीत बाजार कीमत कम होने पर वस्तु की पूर्ति भी कम हो जाती है।

(2) वस्तु के उत्पादक साधनों की कीमतें :– वस्तु के उत्पादन में प्रयुक्त साधनों की कीमतें बढने पर उसकी उत्पादन लागत बढ़ जाती है। इसके विपरीत जिन वस्तुओं के उत्पादन में प्रयुक्त साधनों की कीमतें घट जाती हैं, उनकी उत्पादन लागत भी घट जाती है। ऐसे में अधिक उत्पादन लागत पर कम उत्पादन होने से बाजार में उत्पाद की पूर्ति घट जाती है और इसके विपरीत उत्पादन लागत घटने पर उसकी बाजार पूर्ति बढ़ जाती है।

(3) सम्बन्धित वस्तुओं की कीमतें :– बाजार में कभी–कभी वस्तु की पूर्ति अन्य सम्बन्धित वस्तुओं (पूरक या स्थानापन्न) की कीमतों के परिवर्तन से प्रभावित होती है। जिस वस्तु की सम्बन्धित वस्तु की कीमतें बढ़ती हैं तो उत्पादक उस वस्तु के उत्पादन को बढ़ाने की ओर प्रेरित होते हैं और अधिक लाभ प्राप्त करते हैं। ऐसे में जिस वस्तु की कीमत में कोई वृद्धि नहीं हुई है, उसकी पूर्ति कम हो जाती है।

पूरक वस्तुएँ :– व्यवहार में ऐसी वस्तुएँ पाई जाती हैं, जो अकेले क्रय तो की जा सकती हैं किंतु उसकी उपयोगिता तभी है जब उससे सम्बन्धित अन्य वस्तु को भी क्रय किया जाए। (अतः ऐसी वस्तुएँ जिनका एक साथ उपयोग किया जाता है तथा एक वस्तु के अभाव में दूसरी वस्तु की उपयोगिता शून्य हो जाती है।) उदाहरण के लिए पैन और स्याही, कार और पैट्रोल आदि पूरक वस्तुएँ हैं।

स्थानापन्न वस्तुएँ :– ऐसी वस्तुएँ जिनमें एक वस्तु के स्थान पर उससे सम्बन्धित अन्य वस्तु का उपयोग करने पर उपभोक्ता को समान संतुष्टि प्राप्त होती है स्थानापन्न वस्तुएँ कहलाती हैं। उदाहरण के लिए चाय और कॉफी दोनों गर्म पेय पदार्थ हैं और एक के स्थान पर दूसरे पेय का उपयोग करने से व्यक्ति को समान संतुष्टि प्राप्त होगी। इसी प्रकार पेप्सी और कोक भी स्थानापन्न वस्तु के उदाहरण हैं।

(4) तकनीकी/प्रौद्योगिकी परिवर्तन :– समय के साथ उत्पादन की नई–नई तकनीकें विकसित हो रही हैं जो कम समय और कम लागत पर अधिक उत्पादन प्रदान करती हैं जिससे किसी वस्तु विशेष की पूर्ति बाजार में बढ़ जाती है। ऐसे तकनीकी सुधार नवप्रवर्तनों को जन्म देते हैं इससे उत्पादकों के लाभों में यकायक वृद्धि होती है।

(5) विशेष अवसर :– भारतीय अर्थव्यवस्था में त्यौहारों एवं उत्सवों का विशेष महत्व है जिसमें विशिष्ट वस्तुओं या सेवाओं की माँग अचानक बढ़ती है अतः उसकी पूर्ति करने हेतु ऐसे विशेष अवसरों पर उत्पादक अपना लाभ अधिकतम करने के लिये अपनी पूर्ति बढ़ा कर बिक्री बढ़ाने का प्रयास करते हैं।

(6) आगतो की गुणवत्ता :– कई बार अच्छे किस्म का कच्चा माल उपयोग करने से भी वस्तु की उत्पादन मात्रा में वृद्धि होती है। विशेषकर कृषिगत उत्पादन में अच्छे किस्म के ''हाइब्रिड'' बीजों के उपयोग से पैदावार में अत्यधिक वृद्धि प्राप्त होती है जिससे उसकी पूर्ति बढ़ जाती है।

(7) परिवहन लागतें :– बाजार पूर्ति पर परिवहन लागतों का भी बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। यदि बेहतर परिवहन

सुविधाओं के कारण लागतें कम होती हैं तो इसका सीधा प्रभाव वस्तु की परिवहन मात्रा पर पड़ता है और पूर्ति बढ़ जाती है।

पूर्ति का नियम

पूर्ति का नियम :– एक निश्चित समय पर वस्तु विशेष पूर्ति की मात्रा और उसकी कीमत में फलनात्मक सम्बंध को व्यक्त करता है।

$$S_x=f(P)$$

अन्य बातें समान रहने पर, वस्तु की कीमत बढ़ने पर उसकी पूर्ति बढ़ जाती है और कीमत घटने पर पूर्ति घट जाती है, इसे ही पूर्ति का नियम कहते हैं।

अतः पूर्ति का नियम यह बताता है कि वस्तु की कीमत और पूर्ति समान दिशा में गतिशील होते हैं अर्थात् वस्तु की कीमत और पूर्ति में प्रत्यक्ष और धनात्मक सम्बन्ध होता है।

पूर्ति के नियम की मान्यताएँ :–

1. वस्तु विशेष के उत्पादन साधनों की पूर्ति और कीमतें स्थिर रहें।
2. वस्तु विशेष के उत्पादन की तकनीक स्थिर रहे।
3. वस्तु विशेष के प्रति विक्रेता एवं क्रेता की रुचि स्थिर रहे।
4. वस्तु विशेष की पूर्ति विभाज्य हो।
5. वस्तु विशेष से संबधित वस्तुओं की कीमतें स्थिर रहें।
6. सरकार द्वारा आरोपित कर एवं अनुदान स्थिर रहें।
7. कृषिगत पदार्थों की पूर्ति हेतु मौसम और जलवायु दशाएँ स्थिर रहें।
8. कृषिगत पदार्थों की पूर्ति उसकी कीमत की तुलना में समयावधि (Time Lag) के पश्चात् ही परिवर्तित हो पाती हैं।

पूर्ति के नियम की क्रियाशीलता के कारण :–

- ऊँची कीमतों पर लाभ अधिकतम करने के लिए फर्में अधिक मात्रा बेचने का प्रयास करती हैं।
- ऊँची बाजार कीमतों पर नए उत्पादकों का आगमन
- दीर्घकाल में सभी उत्पादन साधनों की पूर्ति परिवर्तनशील होती है। अतः वस्तु की पूर्ति को बढ़ाना आसान होता है।

पूर्ति अनुसूची एवं पूर्ति वक्र :–

पूर्ति अनुसूची का निर्माण पूर्ति नियम के आधार पर किया जा सकता है। पूर्ति अनुसूची दो प्रकार की होती है–

(1) व्यक्तिगत फर्म पूर्ति अनुसूची
(2) बाजार पूर्ति अनुसूची

व्यक्तिगत फर्म पूर्ति अनुसूची में किसी फर्म विशेष के द्वारा समय विशेष पर बाजार कीमतों पर उपलब्ध पूर्ति मात्रा को दर्शाया जाता है।

व्यक्तिगत फर्म की पूर्ति अनुसूची एवं पूर्ति वक्र :–

उदाहरण के लिये तालिका में एक बिस्किट उत्पादक की दो फर्मों की पूर्ति अनुसूचियों को प्रदर्शित किया गया है। निम्न तालिका में अलग–अलग फर्मों द्वारा दी हुई कीमतों पर बिस्किटों की पूर्ति मात्रा को प्रदर्शित किया है :–

फर्म A की पूर्ति अनुसूची		फर्म B की पूर्ति अनुसूची	
बिस्किट पैकेट कीमतें (रु में)	प्रतिदिन पूर्ति मात्रा (पैकेट में)	बिस्किट पैकेट कीमतें (रु में)	प्रतिदिन पूर्ति मात्रा (पैकेट में)
10	300	10	400
20	400	20	600
30	500	30	800
40	600	40	1000

उपर्युक्त फर्मों के द्वारा बाजार कीमतों पर उपलब्ध पूर्ति मात्रा के अनुरूप इनके पूर्ति वक्रों का स्वरूप नीचे दिखाए रेखाचित्रों में प्रदर्शित किया गया है। x-अक्ष पर बिस्किट पैकेट की पूर्ति मात्रा को और y-अक्ष पर अलग–अलग कीमतों को लिया गया है। कीमत और पूर्ति के संयोग बिंदुओं से प्राप्त वक्र एक धनात्मक ढाल वाला होता है। जिसे पूर्ति वक्र कहा जाता है।

बाजार पूर्ति अनुसूची एवं पूर्ति वक्र :–

बाजार पूर्ति अनुसूची में विभिन्न बाजार कीमतों पर विशिष्ट वस्तु की पूर्ति करने वाली सभी फर्मों की पूर्ति मात्रा का योग प्रदर्शित किया जाता है। यदि बाजार में किसी वस्तु विशेष का उत्पादन करने वाली दो ही फर्में हैं A और B, जिनकी व्यक्तिगत पूर्ति तालिका ऊपर अलग–अलग दर्शायी गई है, बाजार की पूर्ति उपर्युक्त दोनों फर्मों द्वारा उपलब्ध पूर्ति के योग से इस प्रकार प्राप्त की जा सकती है –

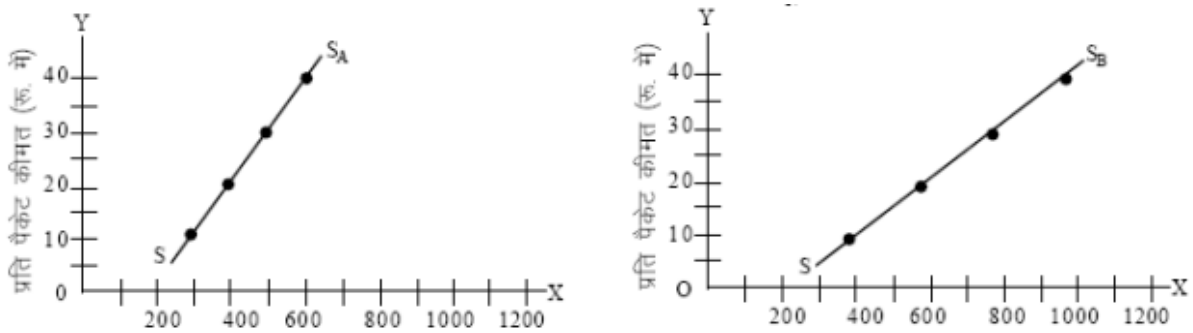

रेखाचित्र 7.1 : पूर्ति की मात्रा (बिस्किट पैकटों की संख्या)

बाजार की पूर्ति अनुसूची			
बिस्किट पैकेट कीमतें (रूपयों में)	बिस्किट पूर्ति A – फर्म द्वारा	बिस्किट पूर्ति B – फर्म द्वारा	बाजार कुल पूर्ति A+B = कुल पूर्ति
10	300	400	300 + 400 = 700
20	400	600	400 + 600 = 1000
30	500	800	500 + 800 = 1300
40	600	1000	600 + 1000 = 1600

बाजार पूर्ति वक्र **(Market spply curve) :-**

उपर्युक्त तालिका के आधार पर दोनों फर्मों A और B, की पूर्ति मात्राओं के योग से प्राप्त कुल बाजार पूर्ति से जो वक्र खींचे जाते हैं उन्हें बाजार पूर्ति वक्र कहते हैं। यह व्यक्तिगत फर्मों के पूर्ति वक्रों के क्षैतिज योग द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। नीचे दिखाए रेखाचित्र में S_M वक्र बाजार पूर्ति वक्र है इसका धनात्मक ढाल वस्तु की कीमत और पूर्ति मात्रा के बीच प्रत्यक्ष धनात्मक सम्बन्ध को दर्शाता हैं।

बाजार पूर्ति वक्र

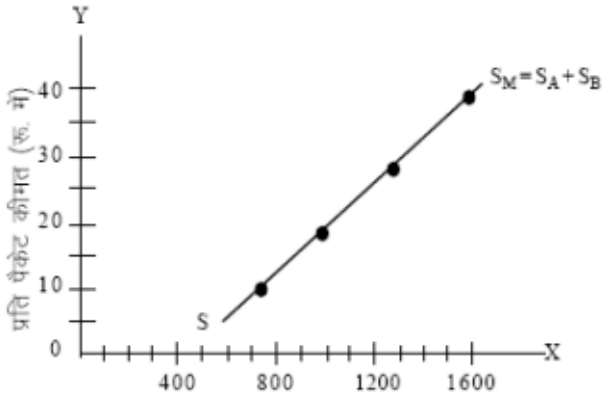

रेखाचित्र 7.2 : (बिस्किट पैकटों की संख्या)

उपर्युक्त रेखाचित्र में X अक्ष पर बिस्किट पैकटों की संख्या तथा Y अक्ष पर प्रति पैकेट कीमत को प्रदर्शित किया गया है। बाजार पूर्ति वक्र S_M व्यक्तिगत फर्म के पूर्ति वक्र S_A और S_B का क्षैतिज योग को प्रदर्शित करता हैं।

पूर्ति वक्र में परिवर्तन :–

एक फर्म का पूर्ति वस्तु की कीमत और उसकी पूर्ति मात्रा के सापेक्ष धनात्मक सम्बन्ध को व्यक्त करता है। पूर्ति मात्रा में परिवर्तन केवल उस वस्तु की कीमत, जिसकी हम पूर्ति का विश्लेषण कर रहे हैं, से होता है। जबकि पूर्ति वक्र में परिवर्तन (शिफ्ट) 'अन्य कारकों' में परिवर्तन के फलस्वरूप होता है जिन्हें हम स्थिर मानकर चलते हैं। जैसे प्रोद्यौगिकी परिवर्तन, कच्चे माल की कीमत, विशेष अवसर, कर इत्यादि।

सर्वप्रथम हम वस्तु की पूर्ति मात्रा में परिवर्तन को वक्र के माध्यम से समझने का प्रयास करते हैं।

पूर्ति मात्रा में परिवर्तन (संकुचन व विस्तार)

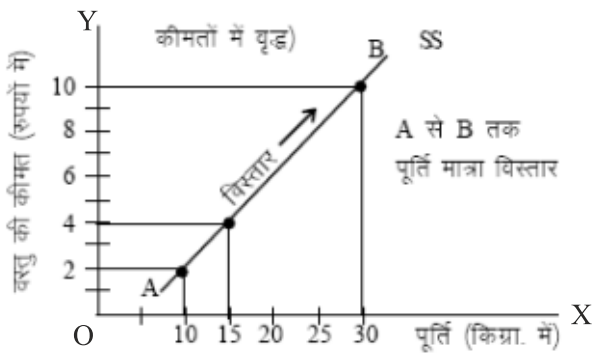

रेखाचित्र 7.3 :

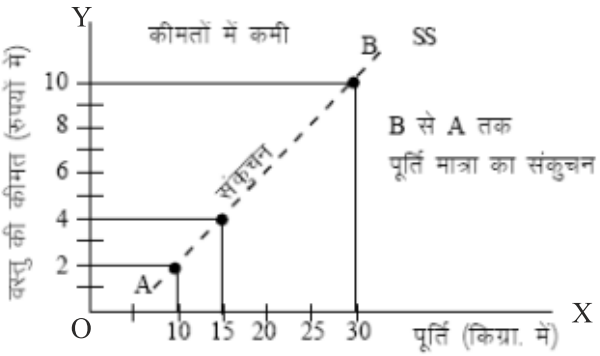

रेखाचित्र 7.4 :

उपरोक्त रेखाचित्र 7.3 से स्पष्ट है कि वस्तु की कीमत बढ़ने पर उसकी पूर्ति मात्रा 10 (2 रुपये कीमत पर) किलोग्राम से बढ़कर 30 किलोग्राम (10 रुपये कीमत पर) हो जाती है जो पूर्ति मात्रा के विस्तार को दर्शाती है जिसे रेखाचित्र 7.3 में SS पूर्ति वक्र के A से B बिन्दु के मध्य वृद्धि (विस्तार) के रूप में दर्शाया गया है। इसी प्रकार उपरोक्त रेखाचित्र 7.4 से स्पष्ट है कि वस्तु की कीमत में कमी आने पर उसकी पूर्ति 30 किलोग्राम से घटकर 10 किलोग्राम रह जाती है जिसे रेखाचित्र 7.4 में SS वक्र के B से A बिंदु के मध्य कमी (संकुचन) के रूप में दर्शाया गया हैं।

पूर्ति वक्र में परिवर्तन (शिफ्ट) :–

पूर्ति वक्र में परिवर्तन वस्तु विशेष की कीमत में परिवर्तन से नहीं बल्कि 'अन्य कारकों' में परिवर्तन हो जाने से उत्पन्न होता है, जैसे प्रोद्यौगिक परिवर्तन, सम्बन्धित वस्तुओं की कीमतें, कर नीति, विशेष अवसर, इत्यादि से सम्पूर्ण पूर्ति वक्र ही शिफ्ट हो जाता है।

रेखाचित्र 7.5 A से स्पष्ट हैं कि प्रोद्यौगिक परिवर्तन में सुधार के फलस्वरुप बिना वस्तु की कीमत बढे उसकी पूर्ति मात्रा Qसे बढ कर Q1 हो जाती है जो पूर्ति वक्र नीचे शिफ्ट होना अर्थात पूर्ति में वृद्धि को दर्शाती हैं जिसे रेखाचित्र A में SS पूर्ति वक्र के बिन्दु E से SS1 पूर्ति वक्र के बिन्दु E1 तक दर्शाया गया है। इसी प्रकार उत्पादन लागत बढ़ने पर उसका पूर्ति वक्र ऊपर शिफ्ट हो जाता है अर्थात पूर्ति में कमी हो जाती है जिसे रेखाचित्र

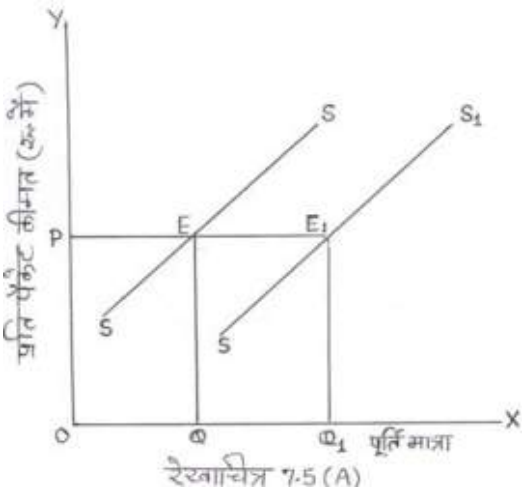

रेखाचित्र 7.5 (A)

पूर्ति वक्र नीचे शिफ्ट होना पूर्ति में वृद्धि

7.5 B में SS वक्र के E से Ss_1 पूर्ति वक्र के बिन्दु E_1 तक दर्शाया गया हैं। पूर्ति मात्रा Q से घटकर Q_1 हो जाती हैं।

महत्वपूर्ण बिन्दु

- पूर्ति स्टॉक का वह भाग है जिसे उत्पादक विक्रय करने के लिए निर्धारित अवधि में तत्पर है।
- किसी वस्तु की पूर्ति का अभिप्राय वस्तु की उस मात्रा से है जिसे विक्रेता एक निश्चित अवधि में, निश्चित सही पर बेचने को तत्पर रहता है।
- अन्य बातें समान रहने पर वस्तु की कीमत बढ़ने पर उसकी पूर्ति बढ़ जाती है और कीमत घटने पर पूर्ति घट जाती है, इसे ही पूर्ति का नियम कहते हैं।
- स्थानापन्न वस्तुएँ : ऐसी वस्तुएँ जिसमें एक वस्तु के स्थान पर उससे सम्बन्धित अन्य वस्तु का उपयोग करने पर उपभोक्ता को समान संतुष्टि प्राप्त होती है।
- व्यक्तिगत फर्म पूर्ति अनुसूची में किसी फर्म विशेष के द्वारा समय विशेष पर बाजार कीमतों पर उपलब्ध पूर्ति मात्रा को दर्शाया जाता है।
- बाजार पूर्ति अनुसूची में ऐसी अनेक व्यक्तिगत फर्मों के द्वारा विभिन्न बाजार कीमतों पर उपलब्ध पूर्ति मात्राओं के योग को दर्शाया जाता हैं।
- पूर्ति मात्रा में परिवर्तन केवल उस वस्तु की कीमत, जिसकी हम पूर्ति का विश्लेषण कर रहें हैं, से होता हैं।
- पूर्ति वक्र में परिवर्तन (शिफ्ट) 'अन्य कारकों' में परिवर्तन के फलस्वरूप होता हैं जिन्हें हम स्थिर मानकर चलते हैं।

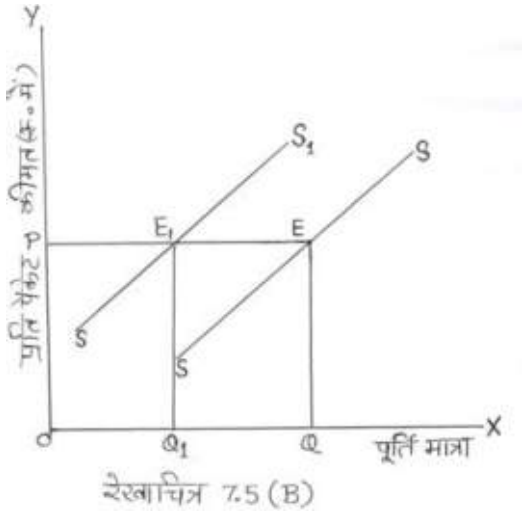

रेखाचित्र 7.5 (B)

पूर्ति वक्र ऊपर शिफ्ट होना पूर्ति में कमी

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

(1) निम्न में से कौन सा तत्व पूर्ति को प्रभावित करता है –
(अ) वस्तु की कीमतें (ब) साधनों की कीमतें
(स) प्रोद्यौगिकी परिवर्तन (द) उपर्युक्त सभी

(2) वस्तु की कीमत और उसकी पूर्ति के मध्य सम्बन्ध होता है–
(अ) प्रत्यक्ष व धनात्मक (ब) प्रत्यक्ष व ऋणात्मक
(स) आनुपातिक सम्बन्ध (द) अप्रत्यक्ष सम्बन्ध

(3) एक सामान्य वस्तु के पूर्ति वक्र का ढाल होता है–
(अ) धनात्मक (ब) आयताकार
(स) ऋणात्मक (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

(4) यदि एक उत्पादक किसी निश्चत समयावधि में कुल 200 इकाई उत्पादन करता है और यदि 180 इकाई बिक्री हेतु बाजार में उपलब्ध करवाता है तो बाजार में उसकी पूर्ति होगी–
(अ) 200 (ब) 20
(स) 380 (द) 180

(5) निम्न में से कौनसा कारक पूर्ति वक्र में परिवर्तन के लिये उत्तरदायी नहीं है –
(अ) कच्चे माल की कीमतें (ब) प्रोद्यौगिकी परिवर्तन
(स) वस्तु की कीमत (द) विशेष अवसर

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न :

1– पूर्ति को परिभाषित कीजिए।
2– स्टॉक से क्या अभिप्राय है?
3– पूर्ति के नियम से आप क्या समझते हैं?
4– बाजार पूर्ति का अर्थ लिखिये।

लघूत्तरात्मक प्रश्न :

1– पूर्ति तथा स्टॉक में भेद कीजिए।

2– पूर्ति के नियम की कोई चार मान्यताएँ लिखिए।

3– पूर्ति के नियम की क्रियाशीलता के कोई चार कारण लिखिए।

4– निम्नलिखित आंकड़ों से बाजार पूर्ति को आकलित कीजिए।

कीमत	10	20	30	40	50	60	70
अ–फर्म की पूर्ति	10	15	20	30	40	50	60
ब–फर्म की पूर्ति	20	30	40	60	80	100	120

5– पूर्ति वक्र में परिवर्तन को रेखाचित्र की सहायता से समझाइये।

निबंधात्मक प्रश्न :–

1– पूर्ति को समझाइये तथा पूर्ति को प्रभावित करने वाले तत्वों का वर्णन कीजिए।

2– पूर्ति के नियम से आप क्या समझते हैं?पूर्ति के नियम को एक उदाहरण द्वारा तालिका और रेखाचित्र की सहायता से समझाइये।

3– पूर्ति वक्र में परिवर्तन (शिफ्ट) किन कारणों से होता है? प्रोद्यौगिकी परिवर्तनों का प्रभाव किस प्रकार से पड़ता है? रेखाचित्र की सहायता से समझाइये।

4– पूर्ति वक्र में 'संकुचन' और 'विस्तार' को रेखाचित्र की सहायता से समझाइये।

उत्तर तालिका

1	2	3	4	5
द	अ	अ	द	स